Vol 6 Issue 11 Dec 2016

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

Mr. Dikonda Govardhan Krushanahari
Professor and Researcher ,
Rayat shikshan sanstha's, Rajarshi Chhatrapati Shahu College, Kolhapur.

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.org

Indian Streams Research Journal

ISSN: 2230-7850 Impact Factor : 4.1625(UIF) Volume - 6 | Issue - 11 | December - 2016

समकालीन हिन्दी कथा लेखिकाओं के कथा साहित्य में नारी की स्थिति

डॉ. अर्चना झा
विभागाध्यक्ष (हिन्दी)
श्री शंकराचार्य महाविद्यालय जुनवानी भिलाई.

सारांश :–
सृष्टि के निर्माण और संस्थान में नारी की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। सभ्यता एवं संस्कृति के विकास का मूलाधार नारी रही है नारी–विमर्श का उद्देश्य साहित्य व समाज में नारी के उस दोयम दर्जे की स्थिति तथा उस स्थिति का बनाये रखने के कारणों की खोज है जो नारी की स्थिति का जिम्मेदार है। समकालीन पुरूष कथाकारों ने स्त्री जीवन से जुड़े विभिन्न प्रश्नों, उसके संघर्षो, अधिकारो और आकांक्षाओं के लिए प्रयत्न आदि विषयों पर अपने–अपने ढंग से लेखनी चलायी है। लेकिन स्त्री–व्यथा, दर्द, पीड़ा, का चित्रण जितना प्रशंसनीय कार्य महिला लेखिकाओं ने किया, वह उसकी अपनी लड़ाई आप लड़ने के सामर्थ्य की घोषणा भी है। महिला कथाकारों ने नारी की पारिवारिक, सामाजिक और दैहिक शोषण के साथ–साथ उसके मानसिक शोषण को अपेक्षाकृत अधिक तीखे–स्वर में अभिव्यंजित किया।

संकेत शब्द (की वर्ड)
संवेदना, जीवंतता, सम–सामयिकता, सामाजिक–यर्थाथ, अभिव्यंजित, पुरूष सत्तात्मक

प्रस्तावना
साहित्य अपने समय का जीवंत दस्तावेज होता है। साहित्य पर तत्कालीन समाज का प्रतिबिम्ब परिलाक्षित होता है। अतः हमें अगर किसी समाज या देश को जानना व समझना है तो पहले उसका साहित्य पढ़ना आवश्यक है क्योंकि साहित्य से हमें उस देश की संस्कृति, धर्म, राजनीति, समाज और शिक्षा की स्पष्ट झलक मिलती है।

समकालीन शब्द अपने में व्यापकता लिए हुए है। समकालीनता का सीधा संबंध सम–सामयिकता से है इस विषय पर डॉ. अशोक भाटिया कहते है–''वह रचना समकालीन कही जायेगी जो अपने समय के बोध को व्यक्त करे। परिवर्तनशील सामाजिक यर्थाथ को रचनात्मक माध्यम से व्यक्त करने वाला रचनाकार ही समकालीन कहा जायेगा''[1] डॉ. नरेन्द्र मोहन ने इस बात को और स्पष्ट करते हुए कहते है–''समकालीन का अर्थ किसी कालखण्ड या दौर में व्याप्त स्थितियों और समस्याओं का चित्रण, निरूपण या बयान भर नही है बल्कि उन्हें ऐतिहासिक अर्थ में समझना और निर्णय ले सकने का विवेक अर्जित करना हैं।''[2]

सृष्टि के निर्माण और संस्थान में नारी की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। सभ्यता एवं संस्कृति के विकास का मूलाधार नारी रही है।भारतीय संस्कृति में धर्म व सभ्यता के निर्मिति में नारी की अहम भूमिका रही है नारी संस्कृति का उद्गम स्थल, पुरूष की प्रेरणा व संघर्ष का प्रतिक है पुरूष व नारी एक–दूसरे के पूरक तत्व है विरोधी नहीं।प्राचीनकाल में स्त्री का स्थान परिवार में चार दिवारी तक ही सीमित था। नारी को किसी भी प्रकार के अधिकार प्राप्त नही थे। बीसवीं शताब्दी के नये चिन्तन ने उसमें जागरूकता, नयी चेतना का संचार किया। नारी शिक्षा, पाश्चात्य प्रभाव, स्वतंत्रता तथा समाज सुधार कार्यक्रमों के कारण सजग और सर्तक होती चली गयी। जिसका चित्रण साहित्य में किया गया।

समकालीन पुरूष कथाकारों ने स्त्री जीवन से जुड़े विभिन्न प्रश्नों, उसके संघर्षो, अधिकारो और आकांक्षाओं के लिए प्रयत्न आदि विषयों पर अपने–अपने ढंग से लेखनी चलायी है। लेकिन स्त्री–व्यथा, दर्द, पीड़ा, का चित्रण जितना प्रशंसनीय कार्य महिला लेखिकाओं ने किया, वह उसकी अपनी लड़ाई आप लड़ने के सामर्थ्य की घोषणा भी है।समकालीन कथा लेखिकाओं ने अपनी कथाओं में नारी के विभिन्न रूप तथा समाज में उसकी वास्तविक स्थिति तथा मनोदशा को उकेरा है। उन्होन नारी की जन्म से लेकर मृत्यु तक की सामाजिक स्थिति को चित्रित किया है फिर वह रूप गर्भस्थ शिशु के रूप में हो या बालिका, अशिक्षित नारी, पत्नी, माँ, बहन, कामकाजी नारी, प्रौढ़ नारी, विभिन्न वर्ग उच्च, मध्य, निम्नवर्गीय नारी, नवीन विचारधारा वाली नारी, स्वच्छंद विचार की नारी आदि की स्थितियों को जहॉ उजागर किया वही कुछ महिला कथाकारों ने आत्मकथाओं के माध्यम से अपनी स्वयं की व्यथा व स्थिति को चित्रित किया है।

स्त्री लंबी लड़ाई लड़ रही है हार भी रही है किन्तु इस हार से थककर बैठ नही रही, बल्कि उससे लड़ आगे बढ़ने की सतत कोशिश कर रही है। भारत में नारी की स्थिति का भान उसके जन्म से ही शुरू हो जाती है। मैत्रिय पुष्पा की कहानी 'पगला गयी भगवती' के माध्यम से एक ऐसे परिवार का चित्रण है जहॉ लड़की का जन्म अशुभ माना जाता है।– ''भागो उछल पड़ी दौड़ कर जिज्जी की खटिया के पास आ गयी जिज्जी ओ जिज्जी! मरी नही है बिटिया! तेरी कौल, जिंदी है, फिकवा नदिओ! जननी ने बहन की आवाज पर ऑखे खोली और उदास हो गयी, मानो बेटी खत्म हो जाने से मिली विश्रांति में किसी ने खलल डाला हो। अब भागो ते ही पाल लै जा मांडी को।''[3]

बालिका जन्म को समाज में अवांछनीय माना जाता है मृदुला गर्ग की कथा 'तीन किलो की छोरी' में बालिका जन्म पर दुःख व्यक्त होता है।स्त्री जीवन के न जन्म पर किसी को खुशी होती है और न मृत्यु पर दुःख। स्त्री–पुरूष में भेदभाव का सिलसिला बचपन से ही प्रारंभ हो जाता है। इसी भाव को नमिता सिंह ने 'वापसी' कहानी में ध्वनित किया है। 'वापसी' में नमिता जी ने एक मॉ

द्वारा बेटा और बेटी के प्यार में अन्तर को दिखाया गया है हमेशा 'माँ' बेटे का ही समर्थन करती रही है। कहानी में बेटा और बेटी के बीच पक्षपातपूर्ण माँ के रवैये को पर्दाफाश करते हुए नमिता जी बेटी की आवाज को वाणी प्रदान करती है–''भाई तो हमेशा अम्माँ के लाड़ले रहें। ऐसे कुछ भी कर आये और उनके सौ खून माफ। बेहद पक्षपात करती थी अम्माँ भइया में अपनी बिरादरी से बाहरी लड़की पसंद कर ली और एलान कर दिया कि वह शादी कर रहे है। अम्माँ के ऊपर कोई प्रतिक्रिया नही हुई, बल्कि वे बेहद खुश।''[4]

पुरूष द्वारा स्त्री को भोग्य मान उसका शोषण किया जाता है पुरूष की कुत्सित मनोवृत्ति ने उसकी ऑखों में वासना की पट्टी बॉध दी है तब ही वह नारी को हमेशा भोगना चाहता है चाहे नारी का शैशव रूप, बालिका रूप, प्रौढ रूप कोई भी हो पुरूष केवल भोगना चाहता है पुरूष की इस लोलुप व वासनापूर्ण मनोवृत्ति का शिकार हर महिला, प्रत्येक नारी को अपने जीवनकाल में कभी न कभी सहना ही पड़ता है। मैत्रेयी पुष्पा ने अपने अनुभव बताते हुए कहती है– माँ ने विधवा होने के बाद पढ़ना शुरू कर दिया और मैने जब होश सँभाला तब वे नौकरी (ग्राम सेविका) के लिए चार सौ किलोमीटर दूर निकल चुकी थी। मैं अकेली बच्ची किसी तरह पढ़ती रही पड़ोसियों और तेरे मेरे घर रह कर इसलिए भी शायद लड़की होने के नाते लड़की के शरीर को लेकर मेरे अनुभव खट्टे ही नही कड़वे भी रहे और जान लिया की सच्चाई हमेशा कड़वी होती है, जिसे सहन करना न शिकार को रास आता है, न खुलना शिकारी को। यदि मै यह कहूँ कि मेरा बचपन पॉच वर्ष की अवस्था में खत्म हो गया और किशोरावस्था ग्यारह वर्ष में, क्योंकि मै इस अवस्था तक वह सब कुछ समझ गयी थी, जिसके कारण औरत पीड़ित, प्रताड़ित और बदनाम की जाती है''[5] वर्तमान समय में छोटी बालिकाओं के साथ बलात्कार या अनाचार व छेड़छाड़ की घटना दैनिक समाचार पत्रों की सुर्खिया बन समाज में बालिकाओं की सुरक्षा पर प्रश्न–चिन्ह लगा रही है। इन घटनाओं को अंजाम देने वाला कोई विक्षिप्त पुरूष नही बल्कि शिक्षित, पुरूष क्या स्वयं शिक्षक विद्या के मंदिर में इन कुकर्मो को अंजाम दे नयी पीढ़ी को अमानवीयता का संदेश दे समाज को पतन के गर्त में ले जा रहा है।

कृष्णा अग्निहोत्री के 'विरासत' 'यही बनारसी रंग था, 'नपुंसक आदि कहानी संग्रहों में आहत नारीमन की कहानियाँ संकलित है। इन कहानियों से ज्ञात होता है कि शिक्षा के प्रचार–प्रसार व नारी की अधिकारों के प्रति सजगता के बावजूद समाज में नारी की स्थिति में कोई विशेष गुणात्मक परिवर्तन नही आया है आज भी नारी के सम्पर्क में आने वाला हर पुरूष उसका इस्तेमाल करना चाहता है।

समकालीन कथा लेखिकाओं की कहानियों के कलेवर ने जो परिदृश्य हमारे समक्ष प्रस्तुत किया है उसमें नौकरीपेशा महिलाओं के जीवन की चिन्ताएँ व उनकी समाज में स्थिति शीर्ष पर है। पितृसन्तात्मक समाज, बाजारवाद, पूँजीवादी संस्कृति और बढ़ती हुई असीमित लालसाओं ने नारी के समक्ष बहुत से संकट खडे कर दिये है। कामकाजी अधिकारी नारियों का पारिवारिक व सामाजिक दोनो स्तरों पर विघटन होता है। समकालीन महिला कथाकारो की कई कथाओं में ऊँच पद पर स्थित नारियों की मानसिकता को उजाजर किया हे। जैसे ममता कालिया की 'जिंदगी सात घण्टे बाद की' मृदुला गर्ग की 'खरीददार', सोमावीरा की 'दो ऑखो वाले चेहरे, मन्नू भण्डारी की 'जीती बाजी की हार', सुधा अरोड़ा की 'महानगर की मैथिली', दीप्ति खण्डेलवाल की 'तपिश के बाद', निरूपमा सेवती की 'टुच्चा' आदि। निरूपमा सेवती की 'टुच्चा' कहानी की नारी तन–मन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए स्वयं अपना अस्तित्व खो चुकी है, वह धूरीहीन जीवन व्यतीत कर रही है–वह एक उपकरण मात्र बनकर रह गई है राशन से लेकर ऑफिस.....तनाव से लेकर तृप्त हुए जानवरो जैसे जिस्म.....घर के लिए समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए शारीरिक पूर्ति और बॉस के लिए मानसिक पूर्ति के लिए..... स्वयं के लिए कुछ नही, नही''[6] अचला नागर की कहानी 'सिफारिश' की गुड्डी दैहिक शोषण से बचने के लिए चार नौकरियाँ छोड़ चुकी है किन्तु पॉचवी नौकरी के लिए सिफारिश चाहिये और उसके लिए गुड्डी को समर्पण करना पड़ता है।[7] ममता कालिया ने जॉच अभी जारी है[8] में स्त्री उत्पीड़न की व्यथा को बहुत ही मार्मिकता के साथ व्यक्त किया है।

कामकाजी स्त्री की छाटपटाहट अपने ही निर्णयों के प्रति असमंजस की स्थिति, संवेदनाओं के उतार चढाव की अत्यन्त ही मर्मस्पशी कहानी है। चित्रा मुदगल की 'दरमियान'[9] एक नौकरी में उलझी स्त्री के पास सबसे अधिक समस्या है समय की। उसकी चिन्ता कभी स्व के प्रति, कभी बच्ची के प्रति, कभी पति के प्रति सन्नद्ध होती है। ऐसी ऊहापोह और उलझन भरी मनः स्थितियों का पुनः पुनः दोहराया जाना यह सिद्ध करता है कि महानगरीय जीवन में नौकरी और परिवार के बीच सामंजस्य स्थापित करना कितना मुश्किल है।

जीवन में बदलाव के कारण स्त्री के सामने नई–नई समस्याऍ निर्मित हुई है आज स्त्रियॉ आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होती हुई भावात्मक रूप से अकेलेपन की समस्या से जूझ रही है। शशिप्रभा जी ने नारी के एकाकीपन की अनुभूति को लेकर अकेली नारी जीवन के विभिन्न पहलुओं पर विचार किया है। 'खुली पलके', 'बैल', काफूर, 'ऋणी' इन कहानियों मे नारी के अकेलेपन की अनुभूतियो का मर्मस्पशी चित्रण किया है सूर्यबाला ने 'सुनो समित, सुनो सुलभ'[10] में नारी के अकेलेपन को उकेरा है। प्रारंभ से लेकर अन्त तक वह दूसरो के लिए ही जीति हुई नजर आती है आज की स्त्री सभी क्षेत्रो में कार्यरत है ऐसी कामकाजी महिलाओं में अविवाहित, विवाहित, विधवा, तलाकशुदा एवं परित्यकता नारियों का समावेश है इसमे हर प्रकार की कामकाजी नारियो को अलग–अलग परेशनियों का सामना करता पड़ता है। ऐसी विधवा कामकाजी स्त्रियो पर अनेक कथा लिखी गयी है। जैसे कुसुम गुप्ता की 'पति को खतरा', महेरून्निसा परवेज की आदम और हव्व[11], निर्मला सिंह की 'सुनहरी सुबह', पुष्पा सक्सेना की 'सच', रागिनी मालवीय की 'खंडित ताम्रपत्र', मंजुल भगत की 'रसप्रिया शिवानी की 'शायद'[12] गायत्री कमलेश्वर की 'सन्तुलन' व 'तस्वीरे' भी बदलती है, मैत्रीय पुष्पा की 'वह छोटी बहू', नीरू भट्ट की 'नई सुबह' आदि महिला कथाकारो ने विधवा स्त्री की समाज में क्या स्थिति होती है इसका चित्रण अपनी कथा में किया है

समकालीन कथा लेखिकाओं ने समाज में परित्यंक्ता नारी की दयनीय स्थिति को चित्रित किया है ससुराल से निकाली गयी नारी को न मायके में स्थान है न दुनिया में नारी जीवन की यह विडम्बना है कि वह स्वयं के जीवन के लिए कोई निर्णय नही ले सकती। मन्नू भण्डारी की 'अकेली' कथा की ''सोमा बुआ अकेली है सोमा बुआ बुढ़िया है, सामा बुआ परित्यक्ता है।''[13] शशिप्रभा शास्त्री की 'चयन' कहानी की नायिका का पति उसको घर से बाहर निकाल देता है क्योंकि नायिका के सौन्दर्य के प्रति पति का बड़ा भाई व छोटा भाई आसक्त हो पति के अनुपस्थिति में उसका फायदा उठाना चाहते है उसके विरोध करने पर उसे बदचलन करार दे पति द्वारा घर से निकलवा दिया जाता है। ऐसी स्त्रियों के समक्ष चयन का प्रश्न ही नही उठता। वह घर लौटे या भाग्य के हाथो पिंटते रहे, हर जगह उसकी बुरीगत है, मौत है।

अतः स्पष्ट है किउन्होने नारी मन की आंतरिक गांठो को सुलझाने का प्रभावशाली प्रयास भी किया है।समकालीन कथा लेखिकाओंने अपनी सभी कहानियों में भारतीय परिवार की मेरूदण्ड कही जाने वाली नारी के विभिन्न रूप और उनकी समाज में स्थिति को पाठको के समक्ष तीव्र रूप में प्रस्तुत करते है।

संन्दर्भ ग्रंथः–

1.भाटिया अशोक–समकालीन हिन्दी कहानी का इतिहास, पृ.–12।
2.मोहन नरेन्द्र –समकालीन कहानी की पहचान–भूमिका पृ.–07।
3.महेश्वर, हेमलता–स्त्री लेखन और समय के सरोकार पृ.–72।
4.सिंह, नमिता–निकम्मा लड़का, पृ.–173।

Volume - 6 | Issue - 11 | December - 2016

5.शर्मा, नासिरा–बुतखाना–पृ.–27 ।
6.सेवती, निरूपमा–खामोषी को पीते हुए पृ.–47 ।
7.वामनकर मिथलेष–समकालीन हिन्दी कहानी स्त्री जीवन, विमिसाहित्य डॉट वर्ड प्रेस डॉट कॉम–ई पत्रिका ।
8.वानकर मिथलेष–समकालीन हिन्दी कहानी स्त्री जीवन, विमिसाहित्य डॉट वर्ड प्रेस डॉट कॉम–ई पत्रिका ।
9.वामनकर मिथलेष–विमिसाहित्य डॉट वर्डप्रेस डॉट कॉम ई–पत्रिका–समकालीन हिन्दी कहानीः स्त्री जीवन ।
10.सूर्यबाला–गृहप्रवेश पृ.–91 ।
11.परवेज, मेहरून्निसा–आदम और हव्वा–पृ.104 ।
12.शिवानी, कृष्णावेणी–शायद पृ.–101 ।
13.भण्डारी, मन्नू–अकेली पृ.–06 ।

डॉ. अर्चना झा
विभागाध्यक्ष (हिन्दी)
श्री शंकराचार्य महाविद्यालय जुनवानी भिलाई.

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.org